34 Heart Care

Curing Your Heart Without Surgery

No Hospitalization

No Surgery

No **Pain**

बिना ऑपरेशन दिल की ब्लॉकेज का इलाज

FDA

FDA Approved

Safest | Non-Surgical

www.34care.com

7065359703/04

अपने हृदय को जानना ज़रूरी क्यों ?

हृदय आपके शरीर का इंजन है जिसका काम है 24सौ घंटे जीवन पोषक रक्त को 90,000 किलोमीटर से भी लम्बी नालियों-प्रणालियों-धमनियों में से दौड़ना। हमारा हृदय एक दिन में लगभग 1,00,000 बार धड़कता है जिसके हिसाब से एक साल में लगभग 4 करोड़ और एक औसत व्यक्ति के जीवन में 300 करोड़ बार धड़कता है। हृदय की इस अविराम धड़कन के कारण हमारा शरीर निरंतर रक्त के माध्यम से ऑक्सीजन, जैविक पदार्थ और ऊर्जा प्राप्त करता है। और सब अवशेष रसायनों को बाहर निकालते रहता है।

भारत में लगभग 30 लाख लोग हर साल हृदय रोग से मरते हैं जो हर साल होने वाली कुल मृतुयों का 30% हिस्सा है। भारत में सबसे ज़्यादा लोग हृदय रोगों से ही मरते हैं। सूत्रों के अनुसार, 2015 तक भारत में 6 करोड़ 20 लाख लोग हृदय रोग से ग्रस्त होंगे। इनमें से, 2 करोड़ से अधिक लोग 40 वर्ष से कम आयु वाले होंगे और केवल 1 करोड़ लोग ही 60 वर्ष से अधिक आयु वाले होंगे। अतः बहुत से युवा भारतीय कम आयु में ही इस रोग से मृत्युग्रस्थ हो जाएंगे।

34 Heart Care हार्ट केयर में आपका स्वागत है

34 हार्ट केयर आपकी सेवा में समर्पित है–एक ऐसी उपचार पद्धति को आप सब के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए जो सिद्ध है और जिसे अंतराष्ट्रीय मन्यता प्राप्त है। ये उपचार बिना किसी दर्द–चीरफाड़ के, न ही केवल आपके हृदय का उपचार करता है बल्कि आपके हृदय के स्वास्थ को पुनः युवावस्था में ले आता है। 34 हार्ट केयर आपके हृदय को सुरक्षित और चीड़फाड़ रहित तरीके से स्वस्थ एवं रोग मुक्त करने में विश्वास रखता है। जिसके लिए वे ई.सी.पी. ECP (एक्सटर्नल काउंटर पल्सेशन) (External Counter Pulsation) और बी.सी.ए. BCA (बायो केमिकल एंजियोप्लास्टी) (Bio Chemical Angioplasty) का उपयोग करते है जो यूरोप और अमेरिका में बड़े स्तर पर उपयोगी साबित हो रहे है और अमेरिकन सरकारी संस्था ऍफ.डी.ए. से प्रमाणित (FDA Approved) है। वे रोगी जो हृदय रोग से ग्रस्थ हैं–जैसे रक्त प्रणालियों में चर्बी का जमना (atherosclerosis/ blockage) (जिससे हार्ट अटैक पड़ता है), वे न केवल रोगमुक्त हो सकते है उपरन्तु अपने हृदय की आयु को पुनः एक नव युवक/युवती के समान प्राप्त कर आगे होने वाले हार्ट अटैक (Heart attack) से बच सकते हैं। 34 हार्ट केयर की पूरी टीम आपकी सेवा में तत्पर है ताकि हमारे सभी स्तरों के हृदय रोगियों को पूर्ण सहयोग मिले व उनका विशेषज्ञों की सलाह व देख रेख में सफल इलाज हो।

आईये आपको आपके हृदय से परिचित करवाएं

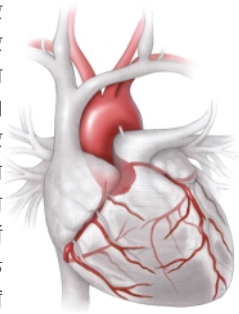

हृदय या दिल मासपेशियों से बना अंग है जो हमारे शरीर में खून के पम्प की तरह काम करता है और समस्त अंगों को ज़रूरी पदार्थ जैसे ऑक्सीजन oxygen), ऊर्जा (energy) इत्यादि पहुँचता है। इसमें 4 कक्ष (चैम्बर्स) (chambers) (दो दायें और दो बाएं) सदैव रक्त से भरे रहते है, पर ये रक्त हृदय इस्तेमाल नहीं कर सकता जब तक कि हृदय की सतह पर दौड़ती छोटी–छोटी धमनियां/नालियां (कोरोनरी ऑर्टरीज़/coronary arteries) इस रक्त को हृदय की कोशिकाओं (cells) तक नहीं पहुँचाती। हृदय की तीन मुख्य धमनियां/कोरोनरी ऑर्टरीज़ (RCA, LAD, LCX) होती है, जिनमें से अन्य और महीन शाखाएं निकल के हृदय के हर हिस्से तक पहुँचती है। पर बढ़ती उम्र के साथ, और अन्य कारण जैसे रक्तचाप (हाई ब्लड प्रैशर/high blood pressure), मधुमय (डायबिटीज़/diabetes), मोटापा, अत्यधिक वसा (हाई कोलेस्ट्रॉल/high cholesterol), या अन्य हानिकारक आदतें/जीवनशैली जैसे खाने में अत्यधिक मात्रा में तेल–घी का प्रयोग, तला हुआ खान पान, धूम्रपान, तम्बाकू, शराब का सेवन, घटता हुआ व्यायाम और अत्यधिक बैठना, इत्यादि से इन धमनियों में वसा (कोलेस्ट्रॉल), जमने लगता है और ये अपनी लचक खो देतीं हैं। इसके फलस्वरुप इन धमनियों की चौड़ाई/व्यास कम हो जाती है। यह प्रक्रिया न केवल मुख्य कोरोनरीज़/धमनियों में होती है बल्कि उसकी बारीक से बारीक शाखाओं तक में होती है जो कोशिकाओं को खून पहुंचा रही है। इसके परिणाम स्वरुप हृदय की रक्त की पूर्ती (supply) पूरी नहीं पड़ती और हृदय धीरे–धीरे कमज़ोर होने लगता है। साथ ही, कई परिस्थितियों में और कई कारणों से अचानक धमनी बंद होने से एकसाथ उतने हिस्से की कोशिकाओं की रक्त सप्लाई बंद हो जाती है और कोशिकाएं सुकड़ने लगती है जिससे छाती में दर्द उठना शुरू होता है,

एन्जाईना (Angina) क्या होता है?

जिसे एन्जाईना (Angina) कहते है। और यदि इसकी तीव्रता या घम्बीरता ज़्यादा हो तो हार्ट–अटैक (heart attack) पड़ जाता है, जिससे हृदय का उतना हिस्सा, अगर समय पे उपचार न हो तो, हमेशा के लिए खराब हो जाता है। एन्जाईना कई रूपों में महसूस हो सकता है। यह छाती के बीचोबीच दर्द, तीव्र कसाव, अचानक सांस फूलना, दम–घुटना, या फैलता हुआ दर्द जो छाती से पेट की तरफ, गर्दन–जबड़े की तरफ, पीठ की तरफ, दायें या बाएं कन्धों की तरफ, या बाएं बाजूँ में, या मतली अथवा अचानक से अत्यधिक थकावट, कमज़ोरी के रूप में आ सकता है। हर व्यक्ति में एन्जाईना अलग रूप से आ सकता है। अगर एन्जाईना तनाव के कारण, या ज़्यादा भाग दौड़ करने पर हो और आराम करने से गायब/या कम हो जाए तो इसे स्टेबल एन्जाईना (stable angina) कहते हैं। और यदि यह आराम करते हुए या किसी भी समय हो जाए और आराम करने से कम या गायब न हो तो इसे अनस्टेबल एन्जाईना (unstable angina) कहते है, जो ज़्यादा खतरनाक होता है। वैसे दोनों ही प्रकार हृदय की धमनियों की सुकड़न को दर्शाते हैं और दोनों से ही हार्ट अटैक होने का खतरा सदैव बना रहता है। मधुमय (डायबिटीज़) में, ज़्यादा उम्र वाले व्यक्तियों में और शराब पीने वालों में कई बार एन्जाईना का दर्द बहुत हल्का या न के बराबर उठता है, जिससे वह लोग इसे नज़र–अंदाज़ कर देते हैं या महसूस ही नहीं कर पाते, समय पर हस्पताल नहीं पहुँच पाते और बहुत बार मृत्युग्रस्थ भी हो जाते हैं।

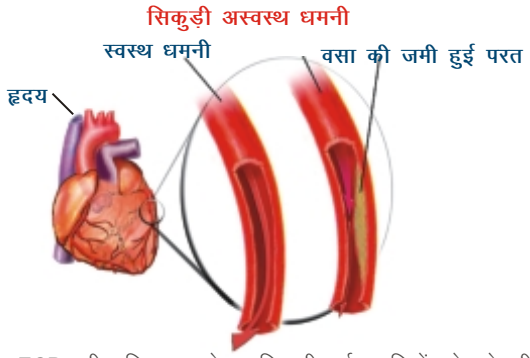

ई.सी.पी. (ECP) की प्रक्रिया न केवल सिकुड़ी हुई धमनियों को खोलती है, बल्कि साथ ही साथ नयी धमनियां (कोलेटरल ऑर्टरीज़ (collateral arteries)/सहायक धमनियाँ) भी बनाती है। अंततः बंद हुई और सिकुड़ी हुई धमनियों के इर्दगिर्द इन सहायक धमनियों का एक नेटवर्क (network) बनाकर हृदय की मासपेशियों और कोशिकाओं को पुनः खून की सप्लाई की पूर्ती कर उन्हें पूर्णतः पोषित करती है।

हम आपको यह सब क्यों बता रहे हैं ?

स्वस्थ→चर्बी कि बढ़ती हुई परत→रक्त प्रवाह में रूकावट→फटी हुई परत→एनजाइना दर्द

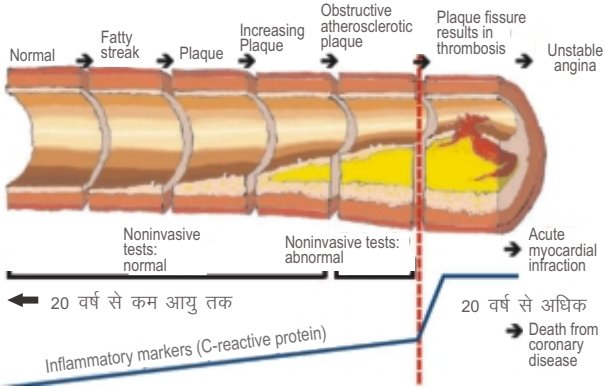

PROGRESSION OF ATHEROSCLEROSIS IN THE CORONARY ARTERIES.

इसे ऐसे समझिए जैसे शहर के अंदर जब ट्रैफिक जाम हो जाता है तो ट्रैफिक को चलाने के लिए नयी बाईपास सड़के बना दी जाती हैं। इसी कारण से इस तकनीक को नेचुरल बाईपास भी कहते हैं।

हम में से ज़्यादातर लोग, भले ही सोसाईटी के किसी भी वर्ग के हों, मोटापे, फास्टफूड और आलस्य से अछूते नहीं हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया (Times of India) के सर्वेक्षण के अनुसार, दिल्ली में 70% से अधिक लोग मोटापे से ग्रस्थ हैं। भारतीय डायबिटीज़ संस्थान (Indian Diabetic Association) के अनुसार, दिल्ली में 30 लाख से अधिक लोग मधुमय (डायबिटीज़) से पीड़ित हैं, और ये ही आँकड़े उच्चरक्तचाप (हाई ब्लड प्रैशर) के भी हैं। पर अगर सच में देखा जाए तो ये आँकड़े सच्चाई से काफी कम हैं क्योंकी इतने तो वे लोग हैं जिनकी जानकारी सरकारी या बड़े हस्पतालों में दर्ज हैं, पर बहुत से लोग अभी भी ऐसे हैं जो छोटे मोटे दवाखानों या देसी इलाजों में लगे हैं और उनकी जानकारी सरकार तक नहीं पहुँचती। और बहुत से ऐसे जने भी हैं जिन्होंने अभी तक इन रोगों के लिए जांच ही नहीं करवाई। इन सबसे भी ज़्यादा चिंता का विषय यह है की मोटापा, डायबिटीज़ और हाई ब्लड प्रैशर जैसे रोग अब युवकों में भी बहुत आम मिलने लगें हैं। ये तीनो, हृदय रोगों की मुख्य जड़ हैं। और समाज में घर कर चुकी –तम्बाकू, शराब और धूम्रपान की आदत, स्तिथि को और बिगाड़ रही है। साथ ही आधुनिक रोग जैसे तनाव/टेंशन, प्रदूषण, खाने पीने में मिलावट इत्यादि हृदय को और बीमार, और कमज़ोर बनाती हैं। हम में से अधिकाँश लोग अपने हृदय की परिस्थिति और स्वाथ्य से अनजान रहते है जब तक हृदय की बीमारी मूह फाड़ के सामने न आजाये।

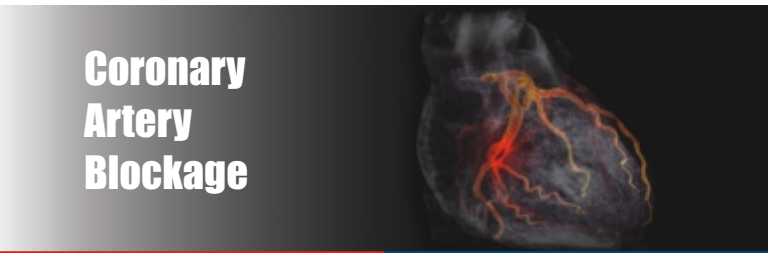

34 Heart Care Treatments

1 **External Counter Pulsation (ECP)**

2 **Artery Chelation Therapy / Bio Chemical Angioplasty (BCA)**

1994 FDA (Food and Drug Administration) Certification

CE Certification

1999 American Medicare

2002 ACC/AMA Guidelines AHA (American Heart Association)

2006 ACC/AMA Guideline ESC (European Society of Cardiology)

2006 CMA Guideline
CMA (Chinese Medical Association)

ACC (American College of Cardiology)

International ECP Society

NHS Approved

34 हार्ट केयर कैसे आपकी मदद कर सकता है ?

हमने कदम बढ़ाया है, न केवल आम आदमी में सतर्कता बढ़ाने की ओर, बल्कि आपके लिए एक ऐसी प्रमाणित, पूर्णतः सुरक्षित और नवीन तकनीक उपलब्ध कराने की ओर जो हृदय रोग की रोकधाम, हृदय रोगियों के लिए लक्षणों से मुक्ति, पुनः हृदय की सेहत लौटाने में कारगर है। यह इलाज 18 साल के यूवा से लेकर 90 साल के वृद्ध व्यक्ति तक सब हृदय व धमनियों के रोगी, व स्वास्थ के प्रति जागरूक लोग (जो रोग ग्रस्त होने से पूर्व ही हृदय का स्वास्थय बनाने के लिए तत्पर हैं)–ले सकतें हैं। इस अत्यंत प्रभावशाली तकनीक का नाम है ई.सी.पी. (एक्सटर्नल काउंटर पल्सेशन External Counter Pulsation या बाह्य प्रतिक्रिय स्पंधन)।

ई.सी.पी. (ECP) (एक्सटर्नल काउंटर पल्सेशन)

ई.सी.पी. (एक्सटर्नल काउंटर पल्सेशन या बाह्य प्रतिक्रिय स्पंधन) एक बिना–चीड़फाड़, बिना–दवाई के हृदय का इलाज है। इसमें आपकी पिंडलियों, जाँघों और पुष्ठों पर ब्लड–प्रैशर मशीन जैसी पट्टियां बाँधी जाती हैं, और उन्हें हृदय गति के अनुसार फुलाया और सुकाड़ा जाता है। इससे हृदय की ओर जाने वाले रक्त में वृद्धि होती है और मुख्य धमनियों से रक्त को दिल और अन्य मुख्य अंगों (जैसे गुर्दे, दिमाग, कलेजा) की ओर भी भेजा जाता है।

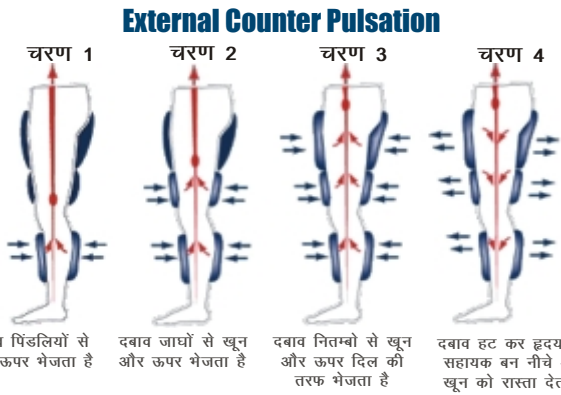

कम धमनियों और खून की कमी से अधिकतर हिस्सा काला है

सैकड़ो नयी धमनियों और खून से परिपूर्ण अधिकतर हिस्सा चमक रहा है

ई.सी.पी. क्या करता है?

ई.सी.पी. न केवल आपके हृदय, बल्कि अन्य मुख्य अंगो के रक्त संचार में भी वृद्धि/इज़ाफा करता है।

हृदय में 20–42% की वृद्धि
दिमाग में 22–26% की वृद्धि
गुर्दों में 19–20% की वृद्धि

ई.सी.पी. के फल स्वरुप दिल की, हर धड़कन में, रक्त को फेकने की मात्रा में 12% तक का इज़ाफा और शक्ति में 30–42% तक का इज़ाफा करता है।

बंद धमनी→खून की कमी से काला पड़ा सिकुड़ा हुआ हिसा

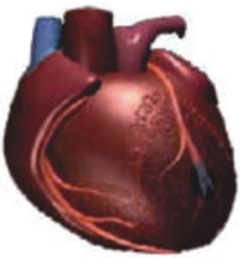

नयी धमनियों खून से से परिपूर्ण और पुनः जीवित हिस्सा

ई.सी.पी. किस किस रोग में मुख्य रूप से लाभकारी है

- एनजाइना (हृदय का दर्द) Angina
- कोरोनरी आर्टरी डिज़ीज़ (हृदय धमनियों में रुकावट) Coronary Artery Disease
- जिन मरीजों को बाईपास या एंजियोप्लास्टी के लिए कहा गया या जो करवा चुकें हों (Bypass and Angioplasty)
- कमज़ोर या फैला हुआ हृदय (Cardiomegaly / CHF)
- पेरीफेरल आर्टरी डिज़ीज़ (पैरो की धमनियों में रुकावट) Peripheral Artery Disease
- पैरों की नलियों में खून का जमना (Varicose veins/DVT Risks)
- पुरुष लिंग की कमज़ोरी (Erectile Dysfunction)
- पैरो की नसों में कमज़ोरी (Peripheral Neuropathy)
- पैरालिसिस मरीज (फालिस/लकवे के मरीज) Paralysis/Stroke
- इंटेस्टिनल आर्टरी डिज़ीज़ (आंतो की धमनियों में रुकावट) Intestinal Artery Disease
- उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रैशर) High Blood Pressure
- क्रोनिक फटीग सिंड्रोम (पुरानी थकान) Chronic Fatigue Syndrome

अन्य लाभ

- (दिमाग की छोटी–छोटी धमनियों में रुकावट) Lacunar infarcts
- पार्किंसन डिज़ीज़ Parkinson's Disease
- गुर्दे के रोग (शुरुआती स्टेज में) Kidney Disease
- मैमोरी (यादाश) की समस्या Alzheimer's disease/ memory issues
- डायबिटीज़ Diabetes
- धमनियों की अन्य बीमारियाँ Vascular disease
- कानों की कमज़ोरी Deafness
- रैस्टलैस लैग सिंड्रोम (पैरों में बेचौनी रहना) Restless leg syndrome
- स्टैमिना बढ़ाना

ई.सी.पी. की सीमाएं

कुछ मरीज़ों को शुरुआती दिनों में पैरों की खाल में ब्लॅड–प्रैशर पट्टी वाली जगह पर खिचाव या खुजली लग सकती है जो अधिक पैड/कपड़ा लगाने से चली जाती है।

कुछ मरीज़ों को शुरुआती दिनों में थकावट बढ़ने जैसा लग सकता है जो कुछ ही दिनों में ठीक हो जाती है।

बी.सी.ए. क्या होता है (बायो–केमिकल–एंजियोप्लास्टी)?

बी.सी.ए., या जिसे मेडिकल भाषा में चिलेशन थेरेपी (Chelation Therapy) भी कहते है, एक अति–साधारण, पूर्णतः सुरक्षित प्रक्रिया है जिससे शरीर से विषैले धातु और खनिज निकालने का काम किया जाता है। शरीर में इंजेक्शन के द्वारा कुछ ऐसे नमक डाले जाते हैं जो इन विषैले पदार्थों से चिपक जाते हैं, और उन्हें अपने साथ खींचकर शरीर से बाहर पेशाब के रस्ते निकाल देते हैं। 50 से अधिक प्रकार की चिलेशन थेरेपी अलग–अलग पदार्थों जैसे सीसा (lead), पारा (mercury), आर्सेनिक (arsenic), इत्यादि के लिए दी जाती हैं। ये सब पदार्थ और कैल्शियम ही खून की नालियों में चर्बी को जमाने के मुख्य सहयोगी है, जिस कारण से चिलेशन थेरेपी से कारगर अभी तक कोई अन्य इलाज नहीं है जो इस जमी हुई चर्बी / कोलेस्ट्रॉल को शरीर से निकाल और साफ कर सके।

EDTA (ई.डी.टी.ए) चिलेशन थेरेपी का प्रयोग एक दशक से भी अधिक समय से हृदय रोग, और अन्य बीमारियों में, जो चर्बी के जमने से होती हैं, किया जा रहा है।

चिलेशन थेरेपी देने की विधि

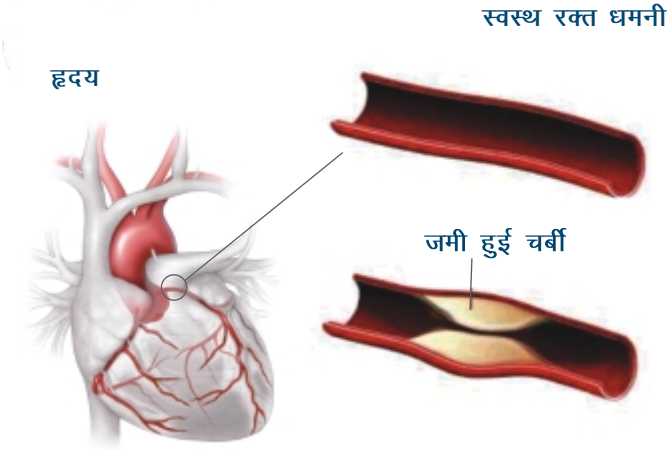

जब बी.सी.ए. को ई.सी.पी. के साथ–साथ दिया जाता है, तब इस EDTA को एक डॉक्टर की देख रेख में ही आपको 20 से 30 दिन इंजेक्शन की मदद से अन्य ज़रूरी प्रचुर मात्रा में विटामिन्स के साथ दिया जाता है। ये इंजेक्शन एक दिन के अंतराल पे दिये जातें है और इसमें लग–भग 2 घंटे का समय लगता है। अमेरिका में किये गये कई प्रयोगों में इसे एक सफल इलाज बताया गया है, और लगभग एक लाख से ऊपर लोग हर साल इस इलाज से लाभ उठा रहें हैं।

चिलेशन थेरेपी के लाभ।

- यादाश सम्बंधित रोगों में (ब्रेन फोग / brain fog)
- हृदय रोग – एनजाइना, हार्ट अटैक
- स्ट्रोक / लकवे में (stroke)
- उच्चरक्तचाप (high B.P.)
- डाइबिटीज़
- थकावट / मॉस पेशियों में दर्द (chronic fatigue syndrome / fibromyalgia)
- पुरुषों में लैंगिक कमजोरी (erectile dysfunction)
- हाथ पैरों में रक्त संचार से जुड़ी समस्याएं एवं हाथ पैरों का ठन्डे रहना।
- जख्मों का धीरे भरने जैसी समस्या

चिलेशन थेरेपी में कुछ ध्यान देने वाली बातें।

- कुछ मरीज़ों को शुरुआत में उपकायी या हल्का–सिरदर्द जैसी शिकायतें हो सकती हैं जो कुछ ही समय के बाद खत्म हो जाती हैं।
- यदि किसी मरीज़ को किसी प्रकार की दवाईयों से एलर्जी हो तो डॉक्टर को अवश्य बतायें।

आम तौर से पूछे जाने वाले प्रश्न

1. ई.सी.पी. इलाज में कितना समय लगता है ?

उ० वैसे साधारण क्रम में ई.सी.पी. को एक घंटा प्रतिदिन दिया जाता है। ऐसे न्यूनतम 35 सेशंस/घंटे पूरे उपचार लगते हैं। सबसे अच्छे परिणामों के लिए सप्ताह में 7 के 7 दिन (रोज़ाना) आना सबसे बेहतर है जिससे ये इलाज 5 हफ्ते में पूरा हो जाता है। पर सहूलियत के अनुसार कम से कम हफ्ते में 5 दिन तो अच्छे परिणामों के लिए देने ही होंगे। कुछ मरीज़ों में ज़रुरत के अनुसार 35 से अधिक सेशंस भी देने पड़ते हैं।

2. ई.सी.पी. कैसे काम करता है ?

उ० ई.सी.पी. मुख्य तौर पे 3 प्रक्रियाएं करता है:–

- बंद हुई और छोटे व्यास वाली धमनियों को खोलता है।
- कई पुरानी निष्क्रिय धमनियों को दोबारा क्रियाशील कर उनमे रक्त का प्रवाह स्थापित करता है।
- नयी धमनियों का निर्माण करता है।

3. ई.सी.पी. के लिए जाने में एक दिल के मरीज़ को क्या फायदे हैं?

उ० वैसे जब भी हम किसी दिल के मरीज़ के इलाज की बात सुनते या सोचते हैं, तो हमारे दिमाग में सिर्फ एंजियोप्लास्टी या बाईपास ऑपरेशन की ही बात आती है। इन सब से अलग, ई.सी.पी. में कोई चीड़फाड़ नहीं है, न मरीज़ को कोई दर्द होता है, न किसी प्रकार का खतरा और न ही उसे कही पे भर्ती होना पड़ता है। यह इलाज़ पूर्णतः सुरक्षित और असरदार है।

4. कैसे जाने की इलाज से हमें कितना फायदा हो रहा है ?

उ० मरीज़ को कुछ ही दिनों में इस इलाज के फाइयेदे दिखने लगते हैं:–

- मरीज़ अब पहले से ज़्यादा चुस्त–दुरुस्त महसूस करने लगता है और बिना थकावट या सांस की दिक्कत के लम्बी दूरी पैदल तय करने लगता है।
- किसी भी समय होने वाले एनजाइना दर्द के डर से मुक्ति मिल जाती है।
- एनजाइना दर्द पहले से कम दर्दनाक होते हैं।
- मरीज़ फिर से अपने बरसो पुरानी चुस्तफुरत जीवन शैली में लौट आता है।

5. ये सहायक धमनियां क्या होती हैं ?

उ० छोटी–छोटी नयी धमनियां जो रक्त को बंद हुई या सिकुड़ी हुई धमनियों के इर्दगिर्द से लेजाकर कोसशिकाओं तक पहुँचाती है, उहने सहायक धमनियां कहते हैं। सहायक धमनियों का बनना एक धीमा काम है और इसमें समय लगता है, और शरीर के स्वास्थ पर उसकी नयी धमनियों के बनाने की क्षमता निर्भर करती है। परन्तु ई.सी.पी. ये निश्चित करता है कि हर हृदय रोगी, या ई.सी.पी. लेने वाले स्वस्थ व्यक्ति में भी ये नयी धमनियां जल्द और लम्बे समय के लिए टिकाऊ रूप से बन जाए।

6. क्या होगा अगर मैं कोई एक–आध दिन इलाज के लिए नहीं आ सका तो?

उ० अगर हमारी माने तो रोज़ लिया गया इलाज सबसे बेहतर परिणाम देता है, फिर भी यदि आप कभी एक–आध दिन आप समय पर इलाज के लिए नहीं आ पाये तो न ही इसका कोई दुष्प्रभाव पड़ेगा और न ही किया हुआ इलाज खराब होगा और आप वही से इलाज जारी रखते है जहाँ आप छोड़ के गए थे। पर यदि गैप कई दिनों का आजाये तो ईलाज के परिणाम पूर्ण रूप से नहीं आ पाते।

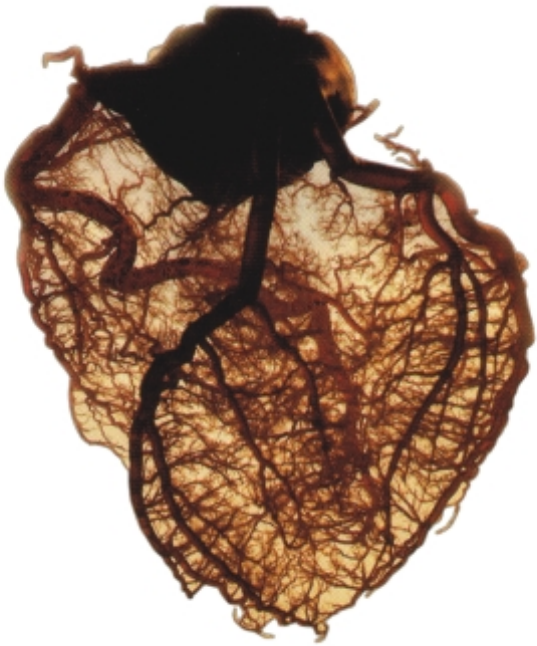

Millions of Capillaries activated after 34 Heart Care Treatment

7. ई.सी.पी लेते समय कैसा महसूस होता है ?

उ० ई.सी.पी. के समय ऐसा लगता है जैसे की आपके पैरो की मालिश कर रहा हो। आपके दिल या सीने पर किसी प्रकार का कोई खिचाव नहीं लगता बहुत से मरीज़ इच्छा अनुसार इलाज के दौरान कोई किताब पढ़ सकते हैं, गाने सुन सकते हैं या टीवी देख सकते हैं। ज़्यादातर मरीज़ इसके दौरान इतना आराम महसूस करते हैं कि सो जाते हैं।

8. ई.सी.पी. के फायदे कब तक बरकरार रहते हैं ?

उ० विशषज्ञों के पाया है की इलाज की समाप्ति के बाद भी मरीज़ों में 3–7 साल तक इसके फायदे देखे गए हैं, अगर आप एक स्वस्थ जीवन शैली का अनुसरण करें तो और बताये हुए परहेजों और नियमित व्यायाम करें तो। पर जिनमें हृदय रोग बहुत ज्यादा हो या बहुत पुराने हो गए हों, हम उन्हें कुछ समय तक हर साल इस इलाज को लेने की सलाह देते हैं।

9. ई.सी.पी. कितना कारगर है ?

उ० ई.सी.पी. का फायदा पश्चिमी आंकड़ों के अनुसार 90% से भी अधिक मरीज़ो में मिला है। ज्यादातर मरीज़ 15–20 सेशन बाद ही इससे लाभ महसूस करने लगते हैं। अमेरिका में ये इलाज़ इतना प्रसिद्ध और प्रचलित है की वहां ये बीमा के अंतर्गत होने लगा है और लाखों लोग केवल अमेरिका में हर साल इसे ले रहे हैं।

10. ई.सी.पी., एंजियोप्लास्टी और बाईपास के मुकाबले में कहाँ पर आता है?

उ० कोई मरीज़ जिसे हाल ही में दिल का दौरा पड़ा हो, तो उसे दौरे के समय तुरंत लाभ के लिए तो एंजियोप्लास्टी / स्टेंटिंग की ज़रुरत पड़ती है, क्योंकि ई.सी.पी. कोई आपातकालीन ईलाज नहीं है। पर एक बार दौरे का आपातकाल टल जाने के बाद, उस व्यक्ति को निश्चित रूप से ई.सी.पी. करवानी चाहिए ताकि वह दिल की मरम्मत कर आगे होने वाले नुक्सान से वापस ला सके और पुनः दिल को स्वस्थ बना सके। ई.सी.पी. देखा जाए तो एंजियोप्लास्टी और बाईपास से हर लिहाज़ में बेहतर हैं क्योंकि जहाँ ये इलाज केवल दिल के एक बंद हुई धमनी की तरफ ही केंद्रित रहते हैं, ई.सी.पी. आपके पूरे दिल को एक साथ हर लिहाज़ से ठीक करता है, चाहे वह बंद हुई मोटी से मोटी, या बारीक से बारीक धमनियां हो जिनमे एंजियोप्लास्टी और बाईपास पहुँच ही नहीं सकते या वो सिकुड़ी हुई धमनियां हों, या वह फैला हुआ दिल हो। ई.सी.पी. साथ ही साथ आपके हाई ब्लड प्रैशर को भी काबू करता है। यह आपके हृदय के साथ–साथ वैसा ही काम आपके दिमाग, गुर्दे, हाथपैरों और बाकि अंगों की धमनियों के लिए भी करता है। मतलब यह कहना उचित रहेगा की ई.सी.पी. एक साथ पूरे शरीर का इलाज करता है।

ई.सी.पी. आपके हृदय की कुर्द्रतन ठीक होने की शक्ति को बढ़ाने के लिए काम करता है, जिससे दिल खुद ही नयी धमनियों को बनाये और अपनी रक्त की ज़रुरत को पूरा करे। ई.सी.पी. आपकी धमनियों की अंदरूनी परत की कोशिकाओं को भी सुधारता है जिससे वह दोबारा न सुकड़े या बंद हो और हानिकारक रसायन न बनाएं जिनसे दिल की गति भी काबू में रहती है और हार्ट अटैक का खतरा भी कम होता है।

11. क्या ई.सी.पी. मान्यता प्राप्त इलाज है ?

उ० ई.सी.पी. एक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त इलाज है जिसे अमेरिका में एफ.डी.ए. (FDA), अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन (AHA), अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी (ACC), एवं सी.ई. (CE) से मान्यता मिली हुई है। यूरोप में यूरोपियन सोसाइटी ऑफ़ कार्डियोलॉजी (ESC) और इंग्लैंड में एन.एच.एस. (NHS) की मान्यता प्राप्त है। इस विषय में वहां के अनेको पत्रिकाओं (जर्नल) में कई लेख छपे जा चुके हैं।

12. एक मरीज, जिसकी ऐंजिओप्लास्टी या बाईपास हो चुकी हो क्या वो ई.सी.पी. का इलाज ली सकता है?

उ० जी हाँ बिलकुल! ऐसे मरीज़ों में ऐंजिओप्लास्टी या बाईपास के बावजूद भी दोबारा हार्ट अटैक पड़ने का खतरा सदैव रहता है क्योंकि बारीक धमनियां तो अभी भी बंद है और चर्बी की परत वही की वही पड़ी है। और साथ ही साथ, ये चर्बी की जमती हुई परत बाईपास में डाली गयी धमनी को भी अपने ग्रास में ले लेती है। इसी कारण अधिकतम लोग जो ऐंजिओप्लास्टी या बाईपास करवाते हैं उन्हें दवाईयों के बावजूद कुछ सालों में दोबारा दूसरी धमनियों या बाईपास में डाली हुई धमनी में छल्ले डलवाने पड़ते हैं। इसीलिए हम एवं अंतराष्ट्रीय विशेषज्ञ ऐसे मरीज़ों को बाईपास या ऐंजिओप्लास्टी के बाद हर दो या तीन साल में ई.सी.पी. करवाने की सलाह देते हैं।

13. क्या मुझे कुछ विशेष जाँचें करवानी पड़ेंगी ई.सी.पी./बी.सी.ऐ के पहले?

उ० जी हाँ। ई.सी.पी. से पहले आपको कुछ रक्त की जाँचे, ई.सी.जी., और सी.टी. स्कैन द्वारा एंजियोग्राफी करवाने के सलाह दी जाती है ताकि आपके स्वास्थ के अनुसार आपके लिए उपयुक इलाज और इलाज की अवधी निर्धारित की जाय। कुछ मरीजों में कई अन्य जाँचे जैसे ईको या डोप्पलर भी कारवाने के आवश्यकता पड़ सकती है जिसकी सलाह आपको विशेषज्ञ देंगें।

14. क्या मुझे ई.सी.पी. के बाद कोई जांच करवानी पड़ेगी?

उ० कई मरीज इस ये जाने के इच्छुक होते हैं की इलाज के बाद उनके हृदय में कितना और क्या सुधार आया, जिन्हे हम – टी.एम.टी., ईको, स्ट्रेस ईको, न्युक्लीअर स्कैन या सी.टी. एंजियोग्राफी में से आवश्यता अनुसार जांच करवाने की सलाह देते हैं।

15. क्या मुझे अपना इलाज करने के लिए कुछ विशेष तैयारी करनी पड़ेगी?

उ० ई.सी.पी. एक पूर्णतः सुरक्षित, ओ.पी.डी. के स्तर पे होने वाला इलाज है जिसके लिए आपको अपने रोज मर्राह की दिनचर्या में कोई छेड़ छाड़ नहीं करनी पड़ेगी। आपको बस अपने दिल के लिए अपनी सहूलियत के अनुसार रोज़ाना 1 घंटा निकालना होगा बस।

16. मुझे पेसमेकर लगा हुआ है। क्या में ई.सी.पी. या बी.सी.ऐ. ले सकता हूँ?

उ० जी बिलकुल। पेसमेकर या डेफिब्रिलेटर ई.सी.पी. में कोई हस्तक्षेप नहीं करते।

17. मैं वारफरिन/एसट्रोम की गोली खाता हूँ। क्या इससे ई.सी.पी. या बी.सी.ऐ. में कोई परेशानी है?

उ० जी नहीं। ऐसे मरीज़ भी बिना किसी दिक्कत के ये इलाज करवा सकते हैं।

18. ऐसे कोई रोगी हैं जो ई.सी.पी. नहीं ले सकते?

उ० वैसे तो ई.सी.पी. लगभग हर तरह के रोगी ले सकते हैं। पर गर्भवती महिलाएं, या जिनके एओर्टिक वाल्व में लीकेज हो (ऐ.आर. या एओर्टिक रेगरजीटेशन Aortic Regurgitation) और जिन लोगों की पैरों की धमनियों में खून जम गया हो (Arterial or Deep Venous Thrombosis), उनके लिए ये इलाज उचित नहीं है।

19. मुझे 3 साल या उससे पहले पैरो में खून जमने की शिकायत थी। क्या इससे ई.सी.पी. या बी.सी.ऐ. में कोई परेशानी है?

उ० नहीं। यदि ये दिक्कत पुरानी थी और वर्तमान में ऐसी कोई समस्या नहीं है, तो आप ये इलाज ले सकते हैं। लेकिन इलाज शुरू करने से पूर्व आपके पैरो का डॉप्लर करवाकर रक्त का प्रवाह सुनिश्चित किया जायेगा।

20. क्या ई.सी.पी. से रक्तचाप/ब्लड प्रैशर बढ़ जाता है?

उ० नहीं। जैसा हम पहले ही कह चुके हैं ई.सी.पी. कई प्रकार से आपके रक्तचाप/ब्लड प्रैशर कम करने में मदद करता है। यदि आपका रक्तचाप दवाईयों से नियंत्रित है, तो आप ई.सी.पी. करवा सकते हैं। पर अनियंत्रित रक्तचाप में पहले दवाईयों की सहायता से पहले रक्तचाप का नियंत्रण में आना ज़रूरी है। बाद में इलाज के साथ रक्तचाप का नियंत्रण सुधरने लगता है और कई मरीज़ों दवाईयाँ कम होने लगती हैं।

21. यदि मुझे इलाज के कुछ महीनों या सालों बाद दुबारा एंजाइना/हृदय का दर्द होने लगे तो क्या मैं दोबारा ये इलाज ले सकता हूँ?

उ० जी हाँ। देखिये एक बार पूरे किये गए ई.सी.पी. इलाज का असर आजीवन नहीं रहता। विशेष कर हृदय रोगियों में जिनके हृदय को वैसे ही पहले से काफी क्षति पहुंची हुई है। हृदय रोग एक चिरकारी और दारुण समस्या होती है और रोगियों में कुछ समय बाद लक्षण पुनः आ सकते हैं। परन्तु ये लक्षण कब वापस आयेंगें और किस स्तर पे वापस आएंगे, यह इसपे निर्भर करता है की रोगी ने बतायी गयी दिनचर्या और नियम–परहेज़ों का कितनी अच्छी तरह अनुसरण किया हैं। जब भी मरीज़ को लगे की उसके लक्षण वापस आ रहे हैं, वे पुनः ये इलाज दोहरा सकते हैं। बल्कि हम स्वयं पुराने हृदय रोगियों को ये सलाह देते हैं की उच्चतम लाभ के लिए वे इस ईलाज को 6 महीने या सालाना तौर पे दोहराएं।

22. एक बार इलाज पूरा होने के बाद मुझे क्या करना चाहिए?

उ० इलाज के बाद हृदय की स्वस्थता बनी रहे, और बेहतर बने व दोबारा खराबी की तरफ न जाये, इसके लिए आप को अपने जीवन व दिनचर्या में कुछ अटल बदलाव लाने होंगें –

1) धूम्रपान से मुक्ति
2) हृदय स्वास्थ वर्धक आहार–बिना चर्बी का, कम नमक व मसाले वाला, अधिक मात्रा में फलों–सब्जियों से युक्त आहार
3) वजन घटाना
4) नियमित व्यायाम व योग साधना इत्यादि
5) समय पर विशेषज्ञ से सलाह और नियमित जाँचें

ई.सी.पी. नयी धमनियों का निर्माण करने में सक्षम है। पर ये आपके हाथों में है कि ये नयी धमनियां खुली रहे और हृदय स्वस्थ बना रहे।

23. क्या चिलेशन थेरेपी सुरक्षित है?

उ० चिलेशन थेरेपी पूर्णतः सुरक्षित है। कुछ मरीजों को शुरुआत में उपकायी या हल्का–सिरदर्द जैसी शिकायतें हो सकती हैं जो कुछ ही समय के बाद खत्म हो जाती हैं। परन्तु जटिल गुर्दों के मरीजों में यह इलाज नहीं दिया जा सकता। यदि किसी मरीज़ को किसी प्रकार की दवाईयों से एलर्जी हो तो डॉक्टर को अवश्य बतायें।

24. किन मरीजों को चिलेशन थेरेपी लेनी चाहिए? क्या सभी मरीजों को जो ई.सी.पी. ले रहें हैं, इसकी ज़रूरत पड़ती है?

उ० सभी मरीज़ों को ई.सी.पी. के साथ इसकी ज़रुरत नहीं पड़ती। आपको चिलेशन थेरेपी चाहिए या नहीं, यह डॉक्टर/कार्डियोलॉजिस्ट आपकी जांच और आपकी रिपोर्टों के आधार पे बताएंगे।

25. क्या चिलेशन थेरेपी लेने का कोई और साधन नहीं है ?

उ० बहुत सी जगह चिलेशन थेरेपी जैसे दवाई गोलियों के रूप में दी जाती है पर ये न तो उतनी असरदार है जितनी इंजेक्शन के रुप में, क्योंकि आंतो से ये दवाई बहुत ही कम मात्रा में खून में जा पाती है और जिस कारण से इसे बहुत लम्बे समय तक लेना पड़ता है। साथ ही खाए जाने पर ये दवाई आंतो से बहुत से ज़रूरी पोषण को खून में जाने से रोक देती है जिससे उनकी कमी होने का खतरा होता है। और अंततः इससे उपकाई / उल्टी जैसे लक्षण ज़्यादा होते हैं।

पारम्परिक बाईपास ऑपरेशन और बिना ऑपरेशन के किये जाने वाले 34 हार्ट केयर के इलाज में मुख्य अंतर:

मुख्य अंतर	बाईपास	ई.ई.सी.पी./बी.सी.ए.
बेहोशी / खून की आवश्यकता	हाँ	नहीं
चीरा, निशान, व दर्द	हाँ	नहीं
हस्पताल में भर्ती	हाँ	नहीं
पुनः काम पर लौटने की स्तिथि	कई महीने	उसी दिन
इलाज के दौरान खतरे	बहुत अधिक	कुछ नहीं
जमी हुई चर्बी से मुक्ति	नहीं	20–60%
दौड़ने / कसरत की आज़ादी	नहीं	हाँ

शरीर के बाकी अंग जैसे मस्तिष्क, गुर्दे, कलेजे को लाभ

पूरे शरीर में रक्त संचार का बढ़ना		
मस्तिष्क (brain)	नहीं	22–26%
गुर्दे (kidney)	नहीं	19% तक
हृदय (heart)	नहीं	20–42%

आम जानकारी के लिए संपर्क करे:

34 हार्ट केयर सेंटर
G-80, पहली मंजिल, विकास मार्ग,
मेट्रो के 100 नंबर खंम्बे के सामने
प्रीत विहार, दिल्ली–110092
फोन न0 7065359703/04

www.34care.com

help@34care.com

हमारी शाखाएं:

- प्रीत विहार (पूर्वी दिल्ली)
- प्रशांत विहार (उत्तर दिल्ली)
- मेरठ (उत्तर प्रदेश)

पता आगे देखें...

Heart Care

Our Branches in Delhi NCR

प्रीत विहार (हैड ऑफिस) पूर्वी दिल्ली

G-80, First Floor, Main Vikas Marg,
Opposite Metro Pillar 100,
Preet Vihar, East Delhi 110092
011-4240 1694

प्रशांत विहार उत्तर दिल्ली

D 13, Outer Ring Road, Prashant Vihar,
Near Santom Hospital,
Opposite Bridge Pillar # 1
Rohini, Delhi 110085
011-4513 3434

मेरठ, उत्तर प्रदेश

Shop 13-16, First Floor, Garh Road,
Near Shorab Bus Gate Stand,
Meerut, U.P.- 250003
0121-4033448

For Information & Inquiries:

help@34care.com

7065359703/04

www.34care.com

NO SURGERY | NO PAIN

Safe

Non Surgical

Prevent Future Heart Attack